चांपावतों का इतिहास

प्रथम संस्करण : 2021
पृष्ठ संख्या : 521, रंगीन चित्र पृष्ठ : 49, श्वेत–श्याम चित्र पृष्ठ : 39

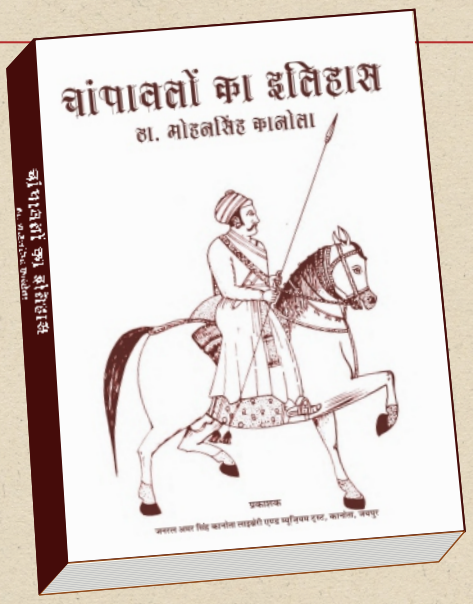

मारवाड़ में मुगल सत्ता के विरुद्ध यहां के शासकों द्वारा एक सशस्त्र अभियान चलाया गया। इतिहास साक्षी है कि इन युद्धों में चांपावत वीरों ने आत्मोत्सर्ग करते हुए अपनी परम देशभक्ति एवं स्वामिभक्ति का परिचय दिया। जब महाराजा अजितसिंह ने वयस्क होने पर दुर्गादास को मारवाड़ के प्रधान का पद देना चाहा तो दुर्गादास ने स्वयं के लिए स्वीकार न कर वह पद ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत (पाली) को देने आग्रह किया। इस प्रकार राठौड़ों द्वारा मारवाड़ की रक्षा तथा स्वतंत्रता के लिए किए गए युद्धों के इतिहास में चांपावत शाखा का इतिहास महत्वपूर्ण रहा है। चालीस अध्यायों में रचित यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। प्रत्येक अध्याय में चांपावत शाखा की उपशाखा पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है। प्रशाखाओं के प्रवर्त्तक, उनके ठिकानों तथा ठिकानों के भाई–बेटों के क्रियाकलापों का भी रोचक वर्णन किया गया है। साथ ही शाखा प्रमुख राव चंपकराज से लेकर इस शाखा के घरानों की विभिन्न उपशाखाओं, प्रशाखाओं की ब्यौरेवार वंशावलियां, स्वयं उनके भाइयों की जागीरें तथा उनके पुत्र–पुत्रियों के विवाह आदि संबंधों पर भी समग्रता से विचार किया गया है।

यह पुस्तक चांपावतों की शाखाओं, उपशाखाओं, उनके संबंधियों के बारे में सविस्तार, सुव्यवस्थित एवं प्रामाणिक व विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध करवाती है। इसमें शूरवीर चांपावत राठौड़ों की कर्मठता, स्वामिभक्ति, मारवाड़ के प्रति प्रेम के साथ–साथ अपने वचन की रक्षा करने और आन–बान–शान के लिए मर मिटने के अनेकानेक प्रसंग मिलते हैं। इन वीर गाथाओं तथा चांपावतों के गौरवमयी इतिहास को एक पुस्तक में प्रस्तुत करना एक असाध्य कार्य है, जिसे लेखक ने अत्यंत ही सुंदर, सरल व चित्रात्मक तरीके से प्रस्तुत करने का भगीरथ प्रयास किया है। इसमें पूर्वकालीन शासकों द्वारा जनहित में किए गए कार्यों आदि का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

ठाकुर मोहनसिंह जी कानोता द्वारा लिखित **'चांपावतों का इतिहास'** केवल राजपूत समाज के लिए ही नहीं अपितु इतिहास प्रेमियों के लिए भी धरोहर स्वरूप है। यह पुस्तक युवा पीढ़ी के लिए भी मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्त्रोत है कि किस तरह से राजपूतों के छोटे बालकों, युवाओं तथा महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की सेवा में अपने प्राणों की आहूति देकर इस धरा को पूजनीय बना दिया।